राँची। झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं मुख्यमंत्री अर्जुन मुण्डा, ब्र.कु.निर्मला तथा अन्य।

ऋषिकेश। महामण्डलेश्वर स्वतंत्र मुनि को शिव संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.आरती।

सफीदों। शिवजयंति पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए राजकुमार मित्तल, ईश्वर शर्मा, ब्र.कु.सुनीता, ब्र.कु.स्नेहा तथा अन्य।

मडगांव। सड़क सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत ''सुरक्षा संदेश'' देते हुए ब्र.कु.शोभा, ब्र.कु.सुषमा, ब्र.कु.मधुकर तथा अन्य।

मनमाड। शिवरात्रि का आध्यात्मिक संदेश देते हुए ब्र.कु.शिलज तथा मंचासीन हैं नगराध्यक्षा सुषमा नलावडे एवं डॉ.पाटील।

मुलुंड। अमृत महोत्सव कार्यक्रम के ग्रुप फोटो में हैं सरदार तारासिंह, जगजीवन भाई तन्ना, नानजी खिमजी ठक्कर तथा अन्य।

परमात्मा की उत्पत्ति का रहस्य युक्त श्रेष्ठ ज्ञान

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

दसवें अध्याय के पहले श्लोक से लेकर सातवें श्लोक तक भगवान की विभूति और योग शक्ति का वर्णन किया गया है तथा उसका फल बताया गया है। आठवें श्लोक से लेकर ग्यारहवें श्लोक तक फल और प्रभाव सहित भक्ति योग का वर्णन किया गया है। बारहवें श्लोक से लेकर अठाहरवें श्लोक तक अर्जुन द्वारा भगवान की स्तुति तथा विभूति और योग शक्ति को स्पष्ट करने के लिए किए गये प्रार्थना का वर्णन किया गया है। उन्नसीवें श्लोक से लेकर बयालीसवें श्लोक तक भगवान द्वारा अपनी विभूतियों का और योग शक्ति का वर्णन किया गया है। इस तरह से भगवान अर्जुन को अपनी उत्पत्ति का रहस्य युक्त श्रेष्ठ ज्ञान बताते हुए कहते हैं कि ''मेरी उत्पत्ति का रहस्य ज्ञान न देवता जानते हैं और न महर्षिगण जानते हैं।'' संसार में जब देवतायें नहीं जानते, महर्षिगण नहीं जानते तो मनुष्य क्या जानेगा, ये तो सोचने की बात है। भगवान कहते हैं कि जो मोह रहित, पाप रहित, ज्ञान-ध्यान से युक्त मनुष्य ही मुझ अजन्मा, अनादि के यथार्थ रूप को जान लेता है। पुन: भगवान ने अपने अव्यक्त स्वरूप के विषय को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि 'मैं अजन्मा हूँ, अनादि हूँ' और मनुष्यात्मा में जो गुण विद्यमान हैं, वह मेरे द्वारा दिये गए हैं। इसलिए दुनिया में भी ये कहावत है कि किसी व्यक्ति के अंदर निन्यानवें अवगुण हों लेकिन एक गुण तो होगा ही। वो एक दो गुण जितने भी हैं वो ईश्वर द्वारा प्रदत हैं। वो ईश्वर की सबसे बड़ी गिफ्ट होती है मनुष्य जीवन को अर्थ पूर्ण बनाने के लिए। जिसके लिए कहा जाता है कि भगवान ने कोई न कोई ऐसी विशेषता या गुण अवश्य ही दिया होगा। भगवान यही बात स्पष्ट करते हैं कि मनुष्यात्मा में जो गुण विद्यमान है, वह मेरे द्वारा दिया गया है। जो दैवी संस्कार हैं वह मैंने ही संकल्प से उन्हें प्रदान किया है। भगवान कैसे देता है। वह तो अजन्मा है, अव्यक्त है तो देगा कैसे ? वो कोई शारीरिक चीज या स्थूल चीज या भौतिक चीज नहीं है जो उसे उठा करके दे दे।

भगवान संकल्पों के द्वारा, उसके अंदर वो दैवी शक्ति उसको गिफ्ट के रूप में देते हैं। इसलिए ये सब मेरी संकल्प की रचना है। जो पुरुष ज्ञान के आधार से मेरी इस विभूति और योग को जानता है, वह निश्चयात्मक योग-युक्त हो जाता है। उसमें कुछ भी संशय नहीं रहता। उसमें क्षण भर भी संशय का संकल्प नहीं आता है। भगवान है या नहीं है, कैसा है क्या है! जिसने उसको जान लिया समझ लिया वह निश्चय बुद्धि हो जाता है। ज्ञान के आधार से जानने की बात पुन: दोहराई है कि जिनका मन निरंतर मुझमें रमा हुआ है, जिनका जीवन मेरी सेवा में समर्पित है, जो दूसरों को ज्ञान देते हैं, आपस में भी ज्ञान-चर्चा करते हैं, वह प्रसन्नता एवं दिव्य आनंद का अनुभव करता है। आपस में भी जब हम एक-दूसरे से बात करें, तो शुभ चिंतन ही करें। जैसे कि कहावत है ''परचिंतन पतन की जड़ है, आत्मचिंतन उन्नति की सीढ़ी है।''

जितना हो सके हम एक-दूसरे के प्रति भी उन्नति की बातें करते रहें। इसीलिए भगवान ने कहा कि जो आपस में ज्ञान-चर्चा करते हैं वो प्रसन्नता एवं दिव्य आनंद का अनुभव करते हैं। उन्हें मैं परम ज्ञान प्रदान करता हूँ कि कैसे वो मुझ तक आ सकते हैं। ये ज्ञान परमात्मा ही दे सकते हैं, कोई मनुष्यात्मा नहीं। क्योंकि ये मनुष्य के वश की बात ही नहीं है। भगवान को जानकर के पहचानना। जब तक वो खुद आकर के अपना परिचय न दे तब तक कैसे उसको जानेगें। आज आप किसी गाँव में या किसी शहर में चले जाओ तो लोग अंदाजा लगायेंगे कि इस व्यक्ति के बातों से ऐसा लगता है कि यह यहाँ से आया होगा। उसकी शक्ल से ऐसा लगता है कि वो यहाँ का होगा। इसके चलने-रहने के ढंग से ऐसा लगता है कि ये ऐसा होगा। अंदाजा लगा सकते हैं। लेकिन जब तक आप खुद स्वयं होकर के अपना परिचय न दे तब तक कोई कैसे समझ पायेगा! जब आप अपना संपूर्ण परिचय देते हैं तब वो आपको समझ सकते हैं।ठीक इसी तरह हमने भी आज तक ईश्वर के बारे हर एक ने अपनी बुद्धि से अंदाजा लगाया।

लोगों को जिंदगी... पेज 4 का शेष....

लाशों के ढेर पर खड़ें होकर भी वे आराम से मौज से भाषण दे सकते हैं। युद्ध का वातावरण बनाकर राजनेता खुद की खुशी को सलामत रखने में सफल हो जाते हैं। लोगों के पास समझ नहीं है। प्रश्नों के पार जाकर देखने की उनके पास दृष्टि ही नहीं है। कोई उसको भड़काते हैं, कोई कानों में भर देते हैं कि जेहाद करना है तो लोग आँख बंद करके दौड़ लगा देते हैं। इसके साथ राष्ट्र प्रेम या लोकहित की भावना का कोई संबंध नहीं होते। उनकी नजर में यही एक विडंबना है। जिसके हृदय में खुद की या दूसरों की जिंदगी का कोई कीमत नहीं वो ही खंजर भोक सकते हैं। ऐसे लोग ही आग लगा सकते हैं। हत्या करने में उसे जरा भी आंच नहीं होती। ऐसे मूढ़ लोग ही इसका हथियार बनते हैं। समझदार व्यक्ति के पास खुद की समझ, खुद की दृष्टि और खुद का निर्णय होता है। खुद की विचार शक्ति होती है।

आजकल लोग मारने के लिए कोई न कोई निमत्त की खोज में रहते हैं। जिंदगी व्यर्थ हो गई और उसे खत्म करने में जरा भी आंच अनुभव नहीं करते। युवा हो या वृद्ध या कोई महिला या कोई पुरुष आत्महत्या करने के लिए आतुर होते दिखते हैं।

उसके पास जाकर पूछे कि ऐसा क्यों किया। तो वे कहेंगे कि - 'इसको आप जीवन कहते हैं।' ऐसी जिंदगी से तो मरना बेहतर है। चार-चार संतान होते भी वृद्ध की संभाल न करते देख दंपत्ति जिंदगी से हार खा लेते हैं। पति और पत्नी के बीच थोड़ा सा झगड़ा होते ही पति पत्नी की जिंदगी को खत्म कर देता है। परीक्षा में अपने मन मुताबिक परिणाम नहीं आने पर, असफलता मिलने पर तो अनेक युवा-युवति ट्रेन की पटरी के नीचे कटकर या गले में फंदा लगाकर या जहर पीकर खुद की जिंदगी को समाप्त कर देते हैं। खुद की जान को आग लगाने से भी नहीं डरते हैं। प्यार में असफल होने पर भी अपनी जिंदगी को खत्म कर देते हैं। क्योंकि उनके लिए जिंदगी व्यर्थ बन गई है।

विदेश में एक लेखक 'आत्महत्या के आसान रास्ता' ऐसा एक पुस्तक प्रकट किया। तो बेस्ट सेलर की लिस्ट में आ गया। लोग आज जीते तो हैं लेकिन जीवन जीना पड़ रहा है। जिससे पूर्ण आनंद व संतोष नहीं मिलता। जीवन को एक बोझ की तरह खींचते हैं। इस तरह लोग यहां जीते हैं। हंसते हैं तो भी दिखावट से। न रोते तो भी खुल्ले मन से .... नहीं। कोई क्या कहेगा कोई देखेगा तो क्या कहेगा ? ऐसे भयावह समय के प्रवाह में जीते हैं। हिटलर जैसे स्वभाव वाले लोग के साथ ही जिंदगी बितानी हो तो ऐसी जिंदगी से तो मरना बेहतर है। आज सबसे ज्यादा जरूरत तो ऐसे लोगों की है जो जीवन का उपहार और उत्साह के साथ जीवन जीने की कला सिखाएं। जीवन के मूल्य बताये। अनेक जन्म के बाद परमात्मा की ओर से उपहार के रूप में मिला यह मानव देह और मानव जीवन का बोझ के बारे में समझ दे। संसार का कालचक्र तो चलता ही रहेगा। थोड़ा ज्यादा बदलाव तो होता रहेगा। दूनिया में जीवन ये परमात्मा की अनुपम भेंट मानकर जीने वाले लोग भी है। यही दुनिया में वे अहोभाव, अपार खुश अनुभव और उमंग उत्साह से जीवन जीते हैं। तो हम क्यों नहीं जी सकते ? यह विचार करने जैसा ही है।

चित्तौड़गढ़। विशाल जन सभा में परमात्मा का परिचय देते हुए ब्र.कु.आशा।